शिक्षण पुस्तिका

हिन्दी (कक्षा 6–8)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली
DELHI
SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

State Council for Educational Research and Training
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024

शिक्षण पुस्तिका

हिन्दी (कक्षा 6-8)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली
DELHI
SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

State Council for Educational Research and Training
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024

सत्यमेव जयते

उप मुख्यमंत्री

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

बीते दिनों आए नेशनल एचीवमेंट सर्वे (NAS) की रिपोर्ट, और दिल्ली सरकार की वार्षिक बेसलाइन परीक्षाएं एक कड़वी सच्चाई की तरफ इशारा करतीं हैं। इन सभी के माध्यम से हमें पता चलता है कि दिल्ली नगरपालिका के प्राथमिक विद्यालयों व दिल्ली सरकार के माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बहुत से बच्चे अपनी कक्षा-स्तरीय पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने में भी सक्षम नहीं हैं।

पिछले तीन वर्षों में, दिल्ली सरकार ने ऐसे कई तरह के कदम उठाए, जिनसे कक्षा 6-8 के बच्चों की शिक्षा के स्तर में सुधार आया। इस पहल से हमें कई अच्छे परिणाम भी मिले, परन्तु हमने यह भी जाना कि हम सभी बच्चों को उनके शिक्षा स्तर तक लाने में पूरी तरह सफल तभी हो सकते हैं जब हम प्राथमिक कक्षाओं से ही बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दें।

सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे हर बच्चे को सफल होने का हर प्रकार से मौका मिलना चाहिए। 'कोई भी बच्चा पीछे न छूटे', यह सुनिश्चित करना 'मिशन बुनियाद' का प्रयास है। बच्चों में पढ़ने की क्षमता व मूलभूत (बेसिक) गणित की समस्याओं को हल करने की क्षमता अति महत्वपूर्ण है। इन्ही क्षमताओं के आधार पर आगे की कक्षाओं में शिक्षक अन्य सभी विषयों को सिखा सकते हैं।

यह शिक्षण पुस्तिका मिशन बुनियाद को मूल रूप से कक्षा में स्थापित कराने का सबसे महत्वपूर्ण अंग है।आशा करता हूँ कि आप सभी इस पुस्तिका का उपयुक्त इस्तेमाल करेंगे।

शिक्षित राष्ट्र समर्थ राष्ट्र

शुभकामनाओं सहित,

मनीष सिसोदिया

पढ़ना और लिखना सीखने के लिए कुछ बातें

'पढ़ना' आख़िर है क्या? क्या कुछ अक्षरों को एक साथ जोड़कर शब्दों में उच्चारित करना ही पढ़ना है? 'पढ़ना' सिर्फ़ इतना ही नहीं है बल्कि किसी भी पाठ को पढ़कर अपने अनुभवों से जोड़कर समझने को भी पढ़ना कहा जाता है।

किसी भी पाठ को धाराप्रवाह और सही-सही पढ़ना, पढ़कर समझने का एक चरण है। पाठ पढ़कर समझने के लिए पाठ को निजी ज़िंदगी और पूर्व अनुभवों से जोड़ना ज़रूरी होता है। इसलिए कहा जाता है कि लिखित भाषा को ही नहीं बल्कि उसके अर्थों को समझना 'पढ़ना' कहलाता है। ऐसा नहीं होता कि बच्चा पहले पढ़ना सीखे और बाद में समझना। अत: इस मैनुअल में इन दोनों बातों का ध्यान रखा गया है कि बच्चे धाराप्रवाह पढ़ने के साथ-साथ उस पाठ को समझ के साथ पढ़ें।

हमें आशा है कि आप जब कक्षा में पढ़ाएँगे तो पूरी तैयारी के साथ पढ़ाएँगे, यानी जब आप कक्षा में जाएँ तो कक्षा में क्या करना है, कहानी की कौन-सी गतिविधि करनी है, अलग-अलग स्तरानुसार कौन-कौन सी गतिविधियाँ की जाएँगी, इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए कक्षा का संचालन करें।

क्या हमारे विद्यालयों के प्रत्येक बच्चे के पढ़ने का स्तर उसकी कक्षा के अनुसार है? शायद नहीं। बहुत सारे बच्चे अपनी कक्षा में होने के बावजूद भी सरल कहानी/पाठ को समझ के साथ उचित गति से सही-सही नहीं पढ़ पाते हैं। इस समस्या का हल है। इस पैकेज के आधार पर बड़े ही फ़ोकस तरीक़े से लगातार कुछ दिनों तक इन विशेष दक्षताओं पर काम किया जाता है जिन्हें बच्चे अभी तक प्राप्त नहीं कर पाए हैं। इसको करने का हमारा उद्देश्य बच्चों की पढ़कर समझने की आधारभूत क्षमता को बढ़ाना है। इस पैकेज की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:-

- स्तरानुसार समूह विभाजन
- स्तरानुसार कक्षा संचालन
- स्तर जानने और गतिविधियों का चयन करने के लिए नियमित रूप से बच्चों के पढ़ने का स्तर जानना।
- उचित शिक्षण पद्धति और शिक्षण सामग्री का प्रयोग
- सीखने-सिखाने की विभिन्न गतिविधियों और दक्षताओं का समावेश यानी सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि। अत: कक्षा में सब कुछ **संतुलित पद्धति** से होना ज़रूरी है। संतुलित पद्धति, मतलब ऐसी पद्धति जिसमें धाराप्रवाह पढ़ने और अर्थ समझने के तरीक़ों का सही संतुलन हो।

जाँच करने का तरीक़ा

कहानी

विमला और अजय मेला देखने गए। उन्हें मेले में तरह-तरह की दुकानें दिखीं। मेले में बहुत झूले थे। वहाँ गरम-गरम हलवा और जलेबियाँ भी बिक रही थीं। जलेबी देखकर दोनों के मुँह में पानी आने लगा। उनका जलेबी खाने का मन किया। विमला ने जलेबी खरीदी। दोनों दोस्तों ने मिलकर जलेबी खाई। शाम को दोनों घर लौट आए।

अनुच्छेद

काले बादल छाए हैं।
तेज़ बारिश हो रही है।
मोर भी नाच रहा है।
सब नाच देख रहे हैं।

अक्षर

द क च
ब ल
थ ह त
म ख

बच्चे को कोई भी 5 अक्षर पढ़ने को कहें। कम से कम 4 सही होने चाहिये।

शब्द

नाम तोता
चूहा
धुन मैना
देर रोटी
पीला
माला दिन

बच्चे को कोई भी 5 शब्द पढ़ने को कहें। कम से कम 4 सही होने चाहिये।

बच्चों के पढ़ने का कौशल जाँच करते समय ध्यान देने योग्य बातें

- बच्चों की जाँच 'अनुच्छेद' पढ़ने से शुरू करें। बच्चा अनुच्छेद को शब्दों की तरह न पढ़कर वाक्यों की तरह धाराप्रवाह व आसानी से पढ़े। पढ़ते हुए दो या तीन ग़लतियाँ करता है तो उसे कहानी पढ़ने का मौका दें।
- अगर कोई बच्चा अनुच्छेद पढ़ने में तीन से ज़्यादा ग़लतियाँ करता है तो उसे शब्द पढ़ने को कहें। एक ही शब्द को बार-बार ग़लत पढ़ता है तो उसे एक ही ग़लती मानें।
- यदि बच्चा 5 में से 4 सही शब्द पढ़ लेता है तो उसे एक बार फिर से अनुच्छेद पढ़ने का मौक़ा दें। यदि बच्चे को फिर से ध्यान से पढ़ने को कहें तो हो सकता है कि वे ग़लती सुधार ले। बच्चा अगर अनुच्छेद पढ़ने में दोबारा ग़लतियाँ करता है तो उसे शब्द समूह में ही रखें। यदि बच्चा 4 से कम शब्द पढ़ता है तो उसे अक्षर पढ़ने को दें।
- बच्चे को कोई 5 अक्षर पढ़ने को दें। यदि वह 4 अक्षर सही पढ़ लेता है तो उसे एक बार फिर से शब्द पढ़ने को कहें। यदि बच्चा अक्षर पढ़ लेता है मगर शब्द नहीं पढ़ पाता है तो उसे अक्षर समूह में रखें। अन्यथा 4 से कम अक्षर पढ़ने पर उस बच्चे को प्रारम्भिक समूह में रखें।
- उपरोक्त जाँच प्रपत्र के आधार पर हम सभी बच्चों को उनके पढ़ने के स्तरानुसार अलग-अलग 'समूहों' में विभाजित करें।

ज़ोन ______ शिक्षक /सर्वेक्षक का नाम ______

स्कूल का नाम ______ स्कूल कोड ______

क्र.स०	बच्चे का ID	बच्चे का नाम	लिंग	कक्षा	मौखिक जाँच में उच्चतम स्तर										
					हिंदी की जाँच						गणित की जाँच				
					प्रारंभिक	अक्षर	शब्द	अनुछेद	कहानी	कहानी+	प्रारंभिक	अंक पहचान (1-9)	संख्या पहचान (10-99)	घटाव	भाग

भाग–1
नव निष्ठा

भाग-1

नव निष्ठा

कक्षा संचालन

समूह में सहभागिता

बड़े समूह में कार्य	छोटे समूह में कार्य	व्यक्तिगत कार्य

रोज़ाना की जाने वाली गतिविधियां

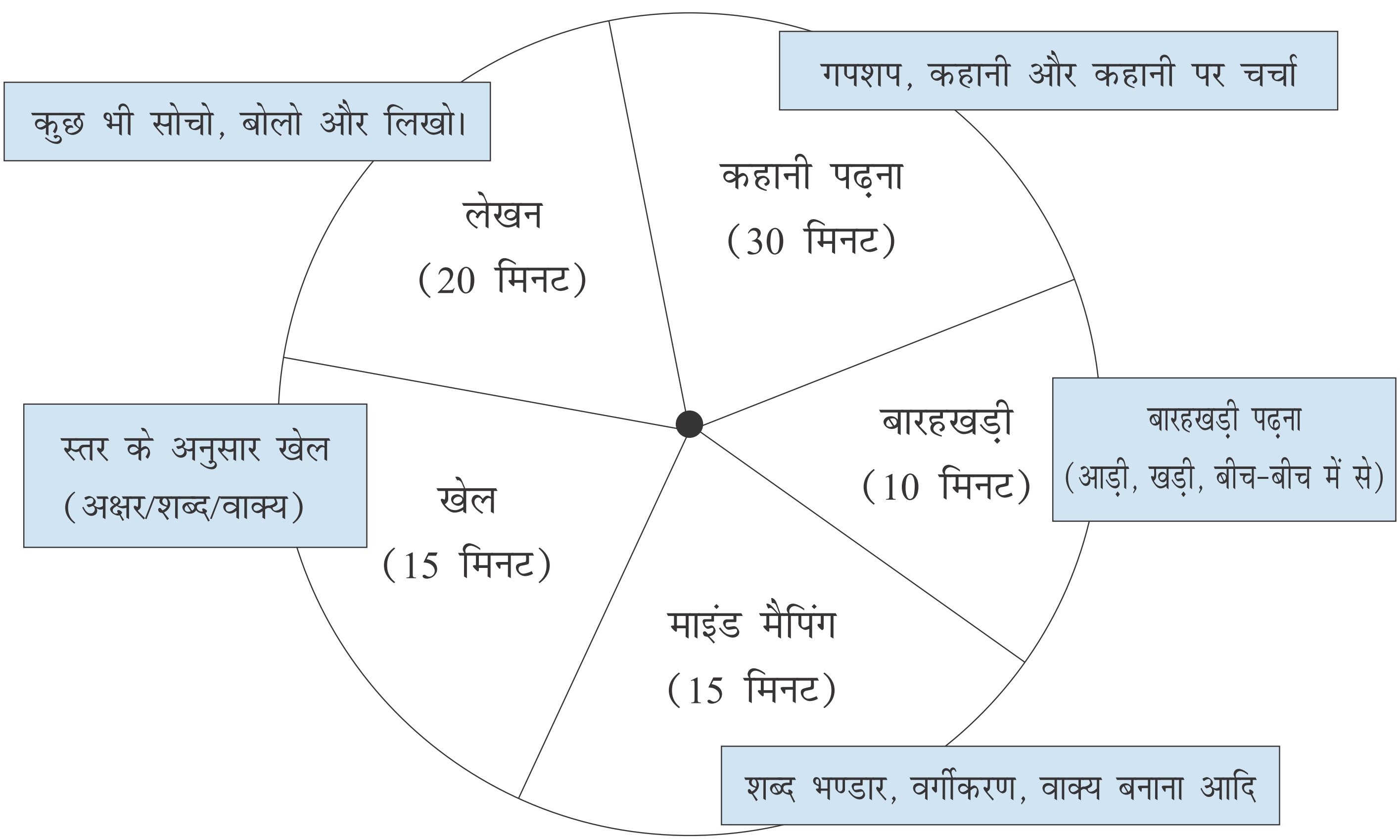

कक्षा संचालन

समूह निर्माण:-

कक्षा शुरू करने से पहले सभी बच्चों की जाँच करते हैं, जिससे अलग-अलग स्तर के बच्चों का समूह बनता है। इसलिए इस पर ध्यान देने की ज़रूरत है कि उन बच्चों के साथ कक्षा का संचालन कैसे करें और किन बातों का ध्यान रखें कि सभी बच्चों का सीखना सुनिश्चित हो सके। बच्चों के पढ़ने के स्तरानुसार उनका समूह बनाएँ और गतिविधि के अनुसार बड़े व छोटे समूहों में कार्य करें। कुछ गतिविधियाँ व्यक्तिगत तौर पर भी होंगी।

समूह में सहभागिता:-

समूह कार्य का मतलब सिर्फ़ यह नहीं है कि किसी कार्य को करने के लिए बच्चे छोटे-छोटे समूह में विभाजित हो जाएँ और कार्य को पूरा करें। **समूह कार्य का उद्देश्य है कि बच्चे छोटे-छोटे समूह में, किसी विषय पर मिलकर चर्चा करें और आपसी सहयोग से उस कार्य को पूरा करें, जिसमें समूह के हर एक बच्चे की न केवल भागीदारी हो बल्कि उस विशेष कार्य के लिए वे ज़िम्मेदार भी हों और उनके कार्य भी निश्चित हों।** अलग-अलग गतिविधियों में अलग-अलग बच्चों की ज़िम्मेदारी हो और इसका निर्णय भी वे खुद लें। अतः हमें देखना है कि समूह कार्य के दौरान:-

- सभी की सहभागिता हो और कार्यों का बँटवारा किया गया हो।
- समय-समय पर गतिविधि के अनुसार प्रत्येक की ज़िम्मेदारी बदल रही हो।
- सभी की बात सुनी जा रही हो। सभी को अपनी बात कहने का मौक़ा मिल रहा हो।

1. बड़े समूह में कार्य:- कुछ कार्य शिक्षक बड़े समूह में करें, जैसे- कहानी संबंधित गतिविधियाँ (चित्र पर चर्चा, कहानी पढ़ना, कहानी सुनाना, कहानी पर चर्चा करना, प्रश्न बनाना और पूछना, अँगुली वाचन इत्यादि), बारहखड़ी (चार्ट वाचन, बीच-बीच से पढ़ना और पूछना), बड़े समूह में करेंगे ताकि बच्चों में संबंधित बिंदु पर समझ बन सके।

2. छोटे समूह में कार्य :- जो कार्य बड़े समूह में किए गए हैं उस कार्य का अभ्यास बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में करने के लिए कहें। समूह में कार्य के दौरान सभी बच्चों की भागीदारी हो।

3. व्यक्तिगत कार्य:- लेखन से जुड़े हुए कार्य व्यक्तिगत रूप में दें।

ध्यान रखें:-

- छोटे समूह में काम के दौरान शिक्षक सहायक के रूप में सहयोग करें।
- कक्षा में बच्चे बड़े समूह, छोटे समूह और व्यक्तिगत रूप से कार्य कर सकें इसकी आदत शुरू से डालें।
- अगर छोटे-छोटे समूहों में कार्य हो रहा हो तो सभी बच्चों की भागीदारी हो।
- कार्य/टास्क बच्चों के पढ़ने के स्तर को ध्यान में रखते हुए दिया गया हो।
- कोई भी गतिविधि लम्बे समय तक बड़े समूह, छोटे समूह या व्यक्तिगत तौर पर न हो।
- अलग-अलग स्तर के बच्चों को अलग-अलग निर्देशों की जरूरत पड़ती है। अतः कक्षा चलाते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि आपके निर्देश स्पष्ट और सरल हों।

प्रारंभिक, अक्षर, शब्द, अनुच्छेद

लक्षित समूह :

इस समूह में उन बच्चों को शामिल करें जिनके पढ़ने का स्तर प्रारम्भिक, अक्षर, शब्द व अनुच्छेद हैं।

उद्देश्य

हमारा उद्देश्य है कि कार्यक्रम के अंत तक बच्चे समझ के साथ किसी कहानी/पाठ को धाराप्रवाह के साथ पढ़ सकें, सहजता के साथ किसी विषय पर बोल सकें और अपनी सोच को कुछ शब्दों में लिखित रूप में व्यक्त कर सकें।

रोज़ाना की जाने वाली गतिविधियाँ

कहानी पढ़ना व उससे संबंधित गतिविधियाँ	30 मिनट	गपशप, कहानी और कहानी पर चर्चा (क्या, क्यों, कैसे आदि प्रश्न)
बारहखड़ी	10 मिनट	बारहखड़ी पढ़ना (आड़ी, खड़ी, बीच-बीच में से)
माइंड मैपिंग	15 मिनट	शब्द भण्डार, वर्गीकरण, वाक्य बनाना आदि
खेल	15 मिनट	स्तर के अनुसार खेल (अक्षर/शब्द/वाक्य)
लेखन	20 मिनट	कुछ भी सोचो, बोलो और लिखो।

शिक्षक कुछ मस्ती कुछ पढ़ाई किताब से 1-2 खेल रोज़ कराएँ।

किसी भी गतिविधि में अत्यधिक समय देने से पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में संतुलन नहीं हो पाता है, जिसका सीधा प्रभाव बच्चों के सीखने पर पड़ता है। इसलिए कक्षा की गतिविधियों में संतुलन बनाए रखना ज़रूरी है। साथ ही, इतना कम समय भी न दें कि कुछ समझ में न आए।

बातचीत/गपशप

उद्देश्य:

बच्चे अपने आसपास की चीज़ों के बारे में आत्मविश्वास के साथ किसी के समक्ष अपनी बातें रख सकें और अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर उन बातों को एवं नई जानकारियों को जोड़ सकें।

बच्चों के साथ कक्षा में रोज़ाना बातचीत करें। बातचीत की कुछ गतिविधियाँ नीचे दी गई हैं :

मुझे कुछ कहना है।

शिक्षक किसी एक विषय पर बच्चों से बातचीत करना शुरू करें, जैसे- आज मैंने क्या खाया, आज बहुत गर्मी है, आज बारिश हो सकती है आदि। बच्चों को भी अपनी इस बातचीत में शामिल करें और उन्हें उस विषय पर

अपने अनुभव बताने को कहें। इसी प्रकार शिक्षक प्रत्येक दिन अलग-अलग विषयों पर बातचीत करें। साथ ही साथ, बच्चों को अपने माता-पिता, दादा-दादी भाई-बहन आदि से अलग-अलग विषयों पर बातचीत करके आने के लिए कहें।

अपने मन से....

बड़े समूह में, बच्चों से कहें कि पता है, **''आज सुबह जब मैं सो कर उठी तो मेरा मन कर रहा था कि आज बारिश हो जाए और मैं बारिश में बहुत भीगूँ, नाचूँ और खेलूँ ।''** अब बच्चों से कहें कि आप भी अपने मन की कोई बात बताएँ, जैसे- कुछ भी देखा है, सोचा है या जो करना चाहते हैं आदि। बच्चों को पहले सोचने के लिए कहें फिर उनसे पूछें ।

इस प्रकार आप बच्चों को अलग-अलग विषय देकर बातचीत कर सकते हैं। बातचीत के बाद कहानी संबंधित गतिविधियाँ करें।

कहानी पढ़ना

बच्चों के पढ़ने का स्तर कुछ भी हो, उनके साथ कहानी से संबंधित विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करने से बच्चों में सुनने, समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास होता है और उनका शब्द भंडार बढ़ता है।

एक कहानी को कम से कम 2 दिन इस्तेमाल करें। **हर बच्चे के पास अपनी-अपनी कहानी की किताब हो।**

- कहानी पढ़ने से पहले कहानी के चित्रों व नाम पर चर्चा करें। बच्चों से इस तरह के प्रश्न पूछें- चित्रों में क्या दिख रहा है, कौन क्या कर रहा है, कहानी के चित्रों व नाम के अनुसार कहानी में क्या होगा आदि। (इससे बच्चों की कल्पना शक्ति व अनुमान लगाने की क्षमता का विकास होता है।)

- शिक्षक कहानी को स्पष्ट उच्चारण व आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ पढ़कर सुनाएँ, ताकि बच्चों में 'आदर्श वाचन' की समझ बन पाए। **ध्यान दें कि बच्चे पीछे-पीछे न दोहराएँ।** (पीछे-पीछे दोहराने से वे कहानी को रट लेते हैं, पढ़ना नहीं सीखते।)

- कहानी पढ़ने के बाद शिक्षक कहानी पर आधारित- तथ्य, अनुमानिक, शब्द भंडार और राय देने वाले प्रश्न पूछें। कोशिश करें कि बच्चे ज़्यादा-से-ज़्यादा सोचकर जवाब दें। (जब किसी कहानी पर चर्चा होती है तब बच्चों में कहानी के प्रति रुचि बढ़ती है। इससे कहानी सुनकर समझने (***Listening Comprehension***) की क्षमता का पढ़कर समझने की क्षमता (***Reading Comprehension***) से संबंध होने लगता है)।

• बातचीत और हाव–भाव से कहानी पढ़ने के बाद शिक्षक कहानी के प्रत्येक शब्द पर अँगुली रखकर धीमी गति से पढ़ें। कहानी पढ़ते समय इस बात का ध्यान रखें कि प्रत्येक बच्चे के पास कहानी की अपनी किताब हो और वे भी पाठ पर अँगुली चलाएँ। **बच्चे पीछे–पीछे न दोहराएँ।** (पाठ पर अँगुली चलाने से भाषा के लिखित रूप की समझ बनती है)।

• शिक्षक पढ़ाई गई कहानी को बच्चों से छोटे–छोटे समूह में वाचन करने के लिए कहें।

• शिक्षक प्रत्येक समूह से किसी एक बच्चे को पढ़ने के लिए कहें। इसके लिए **अब कौन पढ़ेगा?** या **मेरे जैसा कौन पढ़ेगा?** जैसे वाक्य का इस्तेमाल किया जा सकता है। प्रतिदिन अलग–अलग बच्चों को पढ़ने का मौक़ा दें। पढ़ने के बाद बच्चों को शाबाशी ज़रूर दें। (शाबाशी मिलने पर बच्चे प्रेरित होते हैं और पढ़ने की कोशिश करते हैं।)

• बच्चों को कहानी में आए उनके मनपसंद शब्दों पर गोला लगाने या ढूँढने के लिए कहें। बच्चों से उन्हीं शब्दों को ब्लैक बोर्ड/ज़मीन पर लिखने के लिए कहें। (कुछ दिन बाद शिक्षक कहानी के कुछ शब्द या वाक्य बोलें, बच्चे उन वाक्यों को कहानी में ढूँढकर दिखाएँ।)

कहानी पर चर्चा क्यों करें ?

चर्चा का मतलब केवल बच्चों से प्रश्न का उत्तर पूछना नहीं है, बल्कि इसका मतलब यह है कि वे अपनी सोच को विषय/पाठ/कहानी से जोड़ पाएँ। जब किसी कहानी के विषय, चित्र या शीर्षक पर बच्चों से चर्चा करते हैं तो उनमें अनुमान लगाने की क्षमता विकसित होती है और कहानी के सन्दर्भ को समझने में आसानी होती है। यह क्षमता कहानी को धाराप्रवाह पढ़ने में सहायता प्रदान करती है।

कहानी क्यों पढ़ें ?

बच्चों को पढ़ने की ओर आकर्षित करने के लिए कहानी पढ़कर सुनाना एक दिलचस्प तरीक़ा है। **प्रत्येक स्तर के बच्चों के लिए कहानियाँ हमेशा मददगार होती हैं।** इसलिए, इनका इस्तेमाल **हर स्तर** के बच्चों के साथ किया जाना चाहिए। कहानी सुनाने और पढ़ने के कई फ़ायदे हैं:

• कहानी के माध्यम से, बच्चा धीरे–धीरे यह समझता है कि 'पढ़ना' केवल पढ़ना ही नहीं, वास्तव में अर्थ समझना है। इससे 'पढ़कर समझने' की क्षमता का विकास होता है।

• बच्चा चाहे किसी भी स्तर का हो, कहानी पढ़ने से किताब से उसका परिचय तो होता ही है, साथ ही साथ लिखित भाषा के प्रारूप को समझने में भी उसे सहायता मिलती है।

• बच्चे में शब्दों को जल्दी–जल्दी पहचान कर पढ़ने की क्षमता के साथ–साथ शब्दों को तोड़–जोड़कर पढ़ पाने की क्षमता भी विकसित होना शुरू हो जाती है।

धाराप्रवाह की ओर

इस मैनुअल की शुरुआत में यह उल्लेख किया गया है कि डिकोडिंग का मतलब अक्षर/मात्राओं को मिलाकर शब्द पढ़ने की क्षमता ही समझ कर पढ़ना नहीं है। यानी सिर्फ़ धाराप्रवाह पढ़ लेने से ही समझ विकसित हो जाएगी, यह ज़रूरी नहीं है। यह कुछ हद तक सच है और यह सच्चाई का सिर्फ़ एक पहलू है। पढ़ते समय अगर कोई बच्चा किसी शब्द पर अटक जाता है तो उसे बहुत कम समय मिलता है, यह सोचने के लिए कि उसने अभी-अभी क्या पढ़ा था। इस तरह बच्चे में पढ़े गए पाठ के बारे में समझ नहीं बन पाती है।

इसलिए धाराप्रवाह पढ़ना बहुत ज़रूरी है। भारतीय भाषाओं और लिपियों के संदर्भ में यह और भी ज़रूरी हो जाता है, क्योंकि हमारी लिपियों में हम जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। यानी, हम जो उच्चारित करते हैं और जो लिखते हैं उनमें संबंध होता है।

अगर कोई स्वर-व्यंजनों को जोड़कर शब्द का निर्माण करता है और उन शब्दों को मिलाकर एक साथ एक ज़रूरी गति के साथ पढ़ता है तो उसमें बेहतर ढंग से पढ़कर समझने की क्षमता बढ़ती है।

ध्वनि-चिन्ह संबंधित गतिविधि

शब्दों को तोड़ने व जोड़ने की गतिविधि कक्षा में रोज़ाना करवाएँ। इस गतिविधि को करने से बच्चों में स्वर-व्यंजन को मिलाकर उसकी ध्वनि को उच्चारित करने व उसको पहचानने व लिखने की समझ विकसित होती है। इसलिए बच्चों के साथ कक्षा में मौखिक व लिखित रूप से यह गतिविधि रोज़ाना करें, जैसे :

मौखिक –

तोड़ना			
पानी –	पा		नी
रात –	रा		त
धरती –	ध	र	ती

जोड़ना				
खि	ड़	की	–	खिड़की
आ	वा	ज़	–	आवाज़
न	दी		–	नदी

लिखित –

पा	ल	–	पाल
जा	र	–	जार
का	र	–	कार

नो	क	–	नोक
लो	ग	–	लोग
सो	ना	–	सोना

नोट : इस प्रकार अलग-अलग मात्राओं और शब्दों के साथ यह गतिविधि करें। ध्यान रहे हर दिन अलग-अलग शब्दों के साथ यह गतिविधि करें।

बारहखड़ी से संबंधित गतिविधियाँ

• शिक्षक बड़े समूह में स्पष्ट उच्चारण के साथ बारहखड़ी की किसी भी दो, तीन लाइन (जो अक्षर कहानी संबंधित गतिविधि के दौरान लिया गया है) की प्रत्येक इकाई पर अँगुली रखते हुए पढ़कर सुनाएँ। बच्चे सिर्फ़ देखें और सुनें। **पीछे-पीछे दोहराएँ नहीं।**

• बारहखड़ी की इकाईयाँ पढ़ने के बाद, शिक्षक उन इकाईयों को पुनः पढ़कर सुनाएँ। इस बार बच्चे अपने-अपने बारहखड़ी कार्ड पर अँगुली चलाएँ।

• बच्चों को छोटे-छोटे समूह में बारहखड़ी वाचन करने के लिए कहें।

• **'अब कौन पढ़ेगा?'** या **'मेरे जैसा कौन पढ़ेगा?'** ऐसा कहकर प्रतिदिन अलग-अलग (3-4) बच्चों को पढ़ने का मौक़ा दें और पढ़ने के बाद उन्हें शाबाशी भी दें। बारहखड़ी की पूरी लाइन पढ़वाने के बाद बच्चों से बीच-बीच में से ज़रूर पूछें, जैसे- **'च'** की लाइन में **'चा'** कहाँ है, **'ची'** कहाँ है, **'चे'** कहाँ है आदि।

• शिक्षक बारहखड़ी की अलग-अलग इकाई व शब्द बोलें और बच्चों को अपने-अपने बारहखड़ी कार्ड में ढूँढने के लिए कहें, जैसे - **रे, टी, कु**, **चालू, पानी** इत्यादि।

• बड़े या छोटे समूह में बच्चों को बारहखड़ी कार्ड दें और उन्हें बीच-बीच से बारहखड़ी की कोई भी इकाई बोलें, बच्चे अपने कार्ड में उसे ढूँढें, उस इकाई को ज़मीन/कॉपी/कागज़ पर लिखें और पढ़कर भी बताएँ। (कुछ दिनों बाद शिक्षक कुछ शब्द/चीज़ों व मिठाइयों के नाम बोलें। बच्चे बारहखड़ी में से ढूँढें, लिखें व पढ़ें।)।

नोट : अगर बच्चों को बारहखड़ी की पूरी एक लाइन समझने में दिक़्क़त होती है तो एक ही अक्षर में अलग-अलग मात्राओं का प्रयोग करके उन्हें समझाया जा सकता है।

माइंड मैपिंग

माइंड मैपिंग की गतिविधि करवाते समय हमारा उद्देश्य है– बच्चों का शब्द भंडार बढ़ाना, शब्दों का वर्गीकरण करना, शब्दों से वाक्य बनाना या फिर माइंड मैपिंग द्वारा आए शब्दों से कहानी लिखवाना आदि।

हम जब माइंड मैपिंग करते हैं तो अच्छा यही होता है कि इसे पूरी कक्षा के बच्चों के साथ किया जाए, ताकि जब बच्चा कोई शब्द बोले तो उस शब्द को वह अपने अनुभव से जोड़ पाए। इससे शब्दों की सूची काफ़ी लंबी हो सकती है। इस अभ्यास से बच्चे नए–नए शब्द और उन शब्दों से जुड़े संबंधों को सीखते हैं। पूरी कक्षा के साथ करने का फ़ायदा यह है कि एक बच्चे के व्यक्तिगत शब्दकोष को कक्षा के सामूहिक शब्दकोष में बदलने का अवसर मिल जाता है।

- माइंड मैपिंग करने के लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ की जा सकती हैं :
- बाज़ार (उदाहरण के लिए) शब्द सुनकर आपके दिमाग़ में और कौन–कौन से शब्द आ रहे हैं, बताएँ।
- शिक्षक बच्चों द्वारा बोले गए शब्दों को बोर्ड पर लिखें।

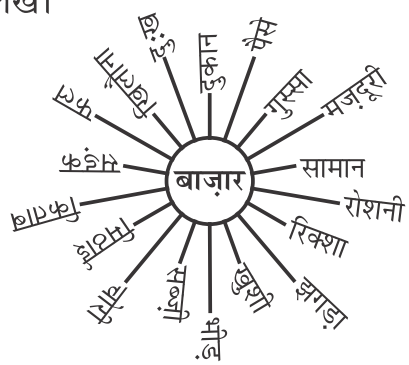

- शब्दों का वर्गीकरण, जैसे –

क्रिया	भाव	खाने–पीने की वस्तु
झगड़ा	खुशी	मिठाई
चोरी	दु:ख	सब्ज़ी
मजदूरी	गुस्सा	फल
शोर		

- शब्दों से वाक्य बनाना, जैसे –

1. **शोर** – राहुल और सलीम कक्षा में बहुत शोर कर रहे थे।
2. **मिठाई** – मुझे मिठाई बहुत पसंद है।
3. **खिलौना** – रीटा और रमेश को खिलौनों से खेलना बहुत पसंद है।
4. **खुशी** – नए कपड़े पहनकर मीना बहुत खुश हुई।
   – रीमा की आँखों में खुशी के आँसू आ गए।

- कुछ शब्दों से नई कहानी बनाना। जैसे – गुस्सा, मज़दूरी, रोशनी, झगड़ा
  (शुरुआत में वाक्य लिखने को कहें, बाद में कहानी लिखने के लिए कहा जा सकता है)

लेखन

शिक्षक बड़े समूह में बच्चों से किसी विषय पर इस प्रकार बातचीत या चर्चा करें ताकि सभी बच्चों को बोलने का मौक़ा मिले। बातचीत के बाद बच्चों को उनके स्तरानुसार छोटे-छोटे समूह में बैठाएँ और उन्हें लिखने के लिए कहें। अलग-अलग स्तरों के बच्चों के साथ निम्न प्रकार से लेखन की गतिविधि हो सकती है :

प्रारम्भिक स्तर - जिस विषय पर बातचीत हुई है उसका चित्र बनाने के लिए कहें और उसके बारे में कुछ लिखने के लिए कहें। यदि बच्चा स्वयं नहीं लिख पाता है या ग़लत लिखता है तो बच्चे से पूछें कि उसने क्या लिखा है? शिक्षक/सहायक स्वयं बच्चे को सही शब्द लिखकर बताएँ।

अक्षर स्तर - बातचीत के बाद बच्चों को उनके मन से कुछ लिखने के लिए कहें। यदि बच्चा लिखने में ग़लतियाँ करता है तो उसे बारहखड़ी की मदद से ठीक करवाएँ।

शब्द स्तर - बच्चों को किसी विषय पर कुछ वाक्य लिखने के लिए कहें। शब्द स्तर के बच्चे लिखते समय वाक्य संरचना, वर्तनी व विराम चिन्हों की ग़लतियाँ ज़्यादा करते हैं। इन बच्चों को उच्चारण के माध्यम से ग़लतियाँ ठीक करने के लिए निर्देश दें (बारहखड़ी का इस्तेमाल ज़रूरत के अनुसार ही करें)

(बच्चों के लेखन की जाँच नियमित रूप से करें। बच्चों के लेखन में जिस तरह की गलतियाँ दिखाई देती हैं, जैसे वर्तनी, मात्राएँ/विराम चिन्ह आदि, अलग-अलग दिन पूरी कक्षा के साथ एक-एक विषय लेकर कार्य करें।)

भाग–2

निष्ठा

भाग–2

निष्ठा

प्रथम दिवस

अपरिचित शब्द चर्चा	समूह पाठ	पाठ पर बातचीत व चर्चा
पाठ पर सवाल बनाना	लेखन (वर्कशीट)	

द्वितीय दिवस

माइंड मैपिंग	रोल प्ले
लेखन (वर्कशीट)	लेखन पर चर्चा

समझ के साथ पढ़ना

किसी भी पाठ/कहानी को जल्दी और सही पढ़ना, पढ़कर समझने का एक चरण है। पाठ/कहानी पढ़कर समझने के लिए उस पाठ/कहानी को निजी ज़िंदगी और पूर्व अनुभवों से जोड़ना ज़रूरी होता है। इसलिए कहा जाता है कि लिखित भाषा को ही नहीं बल्कि उसके अर्थों को समझना 'पढ़ना' कहलाता है।

क्या हमारे विद्यालयों के प्रत्येक बच्चे के पढ़ने और सीखने का स्तर उसकी कक्षा के अनुसार है? अगर ऐसा नहीं है, तो सवाल यह पैदा होता है कि अगर उनका आधार ही कमज़ोर है तो वे अपनी कक्षा के अन्य विषयों को कैसे पढ़ पाएँगे और पढ़कर समझ पाएँगे? अतः ज़रूरत इस बात की है कि उनकी आधारभूत दक्षता को बढ़ाने के लिए कुछ विशेष गतिविधियाँ लगातार की जाएँ ताकि वे किसी भी पाठ/कहानी को पढ़कर समझ सकें, आलोचनात्मक ढंग से सोच सकें और किसी भी विषय पर अपनी सोच मौखिक व लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकें। इसके लिए कक्षा में उनके साथ हर रोज़ कहानी/पाठ पर बातचीत करनी होगी और उनका शब्दभंडार बढ़ाना होगा। हर रोज़ लेखन की गतिविधियाँ कराई जाएँगी ताकि उनकी लेखन क्षमता बढ़ सके। इस उम्र के बच्चों को कोई भी पाठ पढ़ कर समझ आ जाए, इसके लिए ज़रूरी है कि जिस विषय पर पाठ लिखा गया है, उसके बारे में पहले से कुछ पता हो। इसे हम पूर्व ज्ञान कहते हैं। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि कई बार बच्चा सही तरीके से पाठ पढ़ तो लेता है, परन्तु उसके बारे में कुछ भी पता न होने की वजह से वह कुछ समझ नहीं पाता। जब भी बच्चों के साथ 'पढ़ कर समझने की क्षमता' पर काम किया जाए, तो आवश्यक है कि उन्हें विषय ज्ञान/जगत ज्ञान आदि के माध्यम से कार्य करवाए जाएँ। ध्यान रखें कि इस उम्र के बच्चों का अनुभव काफ़ी ज़्यादा होता है। यह अनुभव उनके शैक्षिक उपलब्धियों में नहीं झलकता है क्योंकि बच्चा उस पाठ/कहानी के निहित अर्थों को ही समझ नहीं पाता।

कक्षा में की जाने वाली गतिविधियाँ

एक पाठ/कहानी से सम्बंधित सभी गतिविधियाँ दो से तीन दिन कराई जा सकती हैं। शुरुआती पाठ/कहानी आसान है। इसलिए संभव है कि सारी गतिविधियाँ दो दिन में भी पूरी हो जाएँ।

(i) पाठ में इस्तेमाल हुए अपरिचित शब्दों पर बच्चों को पहले व्यक्तिगत तौर पर फिर समूह में चर्चा करने के लिए कहें और उनके अर्थों को समझने की कोशिश करें। (हर पाठ/कहानी से पहले शब्दों की सूची दी गई है।)

(ii) किसी भी कहानी/पाठ को पढ़ने से पहले, बच्चों से कहें कि वह शीर्षक और चित्र देख कर अनुमान लगाएँ कि कहानी/पाठ में क्या होगा। शिक्षक/शिक्षिका स्वयं बड़े समूह में शीर्षक/चित्र पर चर्चा करें।

(iii) कहानी/पाठ पढ़ना : बच्चों से कहें कि वे मन ही मन में एक बार पाठ/कहानी पढ़ें। फिर किसी एक बच्चे को हाव भाव के साथ बड़े समूह में पढ़ने को कहें। शुरुआत में शिक्षक/शिक्षिका भी हाव भाव से पाठ/कहानी पढ़कर सुना सकते हैं।

बातचीत/चर्चा : शिक्षक बच्चों को समूह में पाठ/कहानी पर प्रश्न बनाने के लिए कहें। फिर हर समूह अपने-अपने प्रश्न

दूसरे समूह के बच्चों से पूछे।

कुछ ख़ास प्रकार के प्रश्न जो बच्चों को पाठ समझने, अपने अनुभवों से जोड़ने, अपनी बातों को विस्तार से बताने और उनकी दक्षताओं को बेहतर करने में मदद करते हैं, नीचे दिए गए हैं :-

- ऐसे प्रश्न जिनसे तथ्य या जानकारी प्राप्त हो
- ऐसे प्रश्न जो सोचने पर मजबूर करे
- ऐसे प्रश्न जो बच्चों से अपरिचित शब्द, मुहावरे आदि का उपयोग अलग-अलग संदर्भो में कराए
- ऐसे प्रश्न जो बच्चों को पाठ/कहानी में दी गई किसी बात पर उनकी राय देने के लिए प्रेरित करे
- ऐसे प्रश्न जो उनको किसी बात/जानकारी को विस्तार/संक्षिप्त रूप से बताने के लिए प्रेरित करे

किसी भी कहानी/पाठ में दी गई जानकारियों को समझने के लिए, उसे चित्रित रूप में लिखने से पढ़कर समझने की क्षमता विकसित होती है। चित्रित रूप में पाठ की जानकारियों को नियोजित करने के लिए इस निर्देशिका में तीन तरीक़े सुझाव के रुप में दिए गए हैं - बच्चों द्वारा पाठ पर प्रश्न बनाने और एक दूसरे से पूछने के बाद शिक्षक/शिक्षिका नीचे दिए गए तीन तरीकों में से किसी एक तरीके से पाठ पर की जा रही चर्चा का समापन करें।

(क) किसी भी एक चीज़ पर ध्यान केंद्रित कर उससे जुड़ी सभी बातों का विवरण लेना, पढ़ कर समझने की क्षमता को बढ़ाता है। (यह अधिकतर सूचनात्मक पाठ के साथ किया जाता है।)

उदाहरण

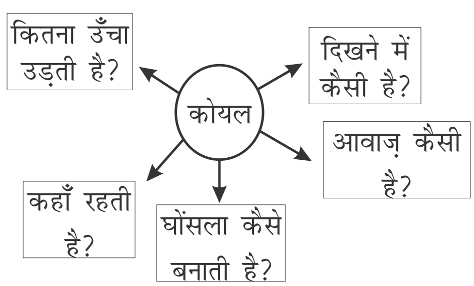

(ख) कोई भी कहानी/पाठ पढ़ कर बच्चे सोचें कि कहानी/पाठ में दिए गए पात्र को कौन-सी परेशानी का सामना करना पड़ा और उसने उसका क्या हल खोजा। (यह अधिकतर कहानियों के साथ किया जाता है।)

उदाहरण

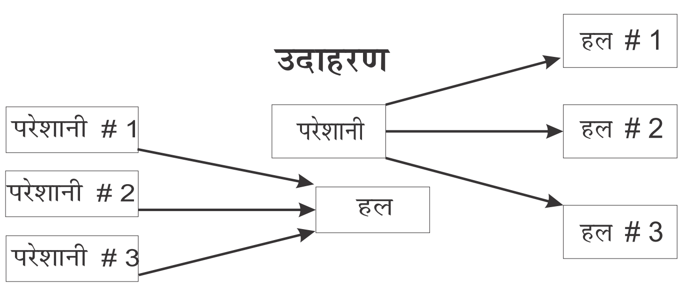

(ग) पाठ/कहानी की घटनाओं या सूचनाओं को क्रमबद्ध तरीके से लिखें।

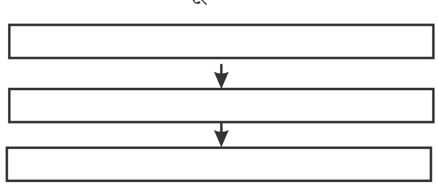

पाठ/कहानी की घटनाएँ/सुचनाएँ

माइंड मैपिंग (यह गतिविधि हर दूसरे दिन करें)

यह एक ऐसा अभ्यास है जिसके ज़रिए किसी भी विषय पर जो संदर्भ हमारे दिमाग़ में बनते हैं उसे माइंड मैपिंग के रूप में दर्शाते हैं। इसका महत्त्वपूर्ण पहलू है इन शब्दों के बारे में ख़ुद का अनुभव होना और उनका व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करना। अगर शब्दों का प्रयोग हम अपने दैनिक जीवन में करते हैं तब वे शब्द हमारे लिए भाषा विकास में लाभदायक होते हैं और वे स्थायी रूप से प्रयोग में आते हैं। साथ ही साथ, अवधारणा वाले शब्द (concept word) को बेहतर तरीक़े से समझने में सहायता मिलती है।

हम जब माइंड मैपिंग करते हैं तो अच्छा यही होता है कि इसे पूरी कक्षा के बच्चों के साथ करें, ताकि जब बच्चा कोई शब्द बोले तो उस शब्द को वह अपने अनुभव से जोड़ पाए। इससे शब्दों की सूची काफ़ी लंबी हो सकती है। इस अभ्यास से बच्चे नए-नए शब्द और उन शब्दों से जुड़े सम्बंधों को सीखते हैं। पूरी कक्षा के साथ करने का फ़ायदा यह है कि एक बच्चे के व्यक्तिगत शब्दकोष को कक्षा के सामूहिक शब्दकोष में बदलने का अवसर मिल जाता है।

इस अभ्यास से शिक्षक अनगिनत अनुभवों को एक सहायक के तौर पर बच्चों से परिचित कराते हैं। हम दूसरों के दृष्टिकोणों को इस गतिविधि के माध्यम से पहचानते और स्वीकारते हैं। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि माइंड मैपिंग की गतिविधि उस वक़्त तक सफल या सार्थक नहीं हो सकती है जब तक शिक्षिका इस गतिविधि को सीखने के आवश्यक लक्ष्य तक न ले जाएँ।

माइंड मैपिंग के अंतर्गत निम्न गतिविधियाँ कराई जाएँ : बच्चों का शब्द भंडार बढ़ाएँ, शब्दों का वर्गीकरण कराएँ, शब्दों से वाक्य बनावाएँ और फिर माइंड मैपिंग द्वारा आए शब्दों से कहानी या अनुच्छेद लिखवाएँ आदि। कोई ज़रूरी नहीं है कि ये सारी गतिविधियाँ हर रोज़ हों। समय के अनुसार गतिविधियों का चयन करें।

रोल प्ले का उद्देश्य : (हर पाठ/कहानी पर रोल प्ले तैयार करके प्रस्तुत करने का मौक़ा दें।)

- किसी भी विषय पर रोल प्ले से बच्चे उस विषय से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं और उस विषय पर अपने विचार बेहतर ढंग से प्रस्तुत कर पाते हैं। रोल प्ले करने से बच्चों की रचनात्मकता, सृजनात्मकता व तर्क-वितर्क करने की दक्षता विकसित होती है।
- बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे किसी भी विषय पर अपने विचारों को व्यक्त कर पाते हैं। यह ऐसी क्षमता है जो बच्चों को आगे बढ़ने में सहायता प्रदान करती है।
- समूह में मिलकर कार्य करने की क्षमता बढ़ती है।
- रोल प्ले में शामिल सभी बच्चे अपने अनुभवों द्वारा विषय/मुद्दे के बाहर घटित घटनाओं को जोड़ते हुए उन पर विचार-विमर्श करते हैं।
- उनके व्यवहार में परिवर्तन होने लगता है।

रोल प्ले करने का तरीक़ा

- कक्षा में शामिल सभी बच्चों को छोटे–छोटे समूह में बाँटें।
- समूह में 6–8 बच्चों को शामिल करें।
- रोल प्ले के दौरान सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करें।
- समूह में सभी बच्चे अपने–अपने पात्रों का चयन व संवाद पर चर्चा करें व अभ्यास करें।
- एक पाठ/कहानी पर एक दिन में केवल 2–3 समूहों की ही रोल प्ले करने का मौक़ा दें। अन्य समूह को किसी अन्य दिन प्रस्तुत करने को कहें।
- रोल प्ले प्रस्तुत करने का समय 3–4 मिनट से ज़्यादा ना दें।

'पढ़ने' और 'लिखने' की क्षमताएँ एक दूसरे से जुड़ी हैं

पहले 'पढ़ने' और 'लिखने' की क्षमताओं को अलग–अलग माना जाता था। कुछ लोग मानते थे कि पहले पढ़ने की क्षमता का विकास होना चाहिए और उसके बाद लिखने की क्षमता का। परन्तु 'पढ़ना' और 'लिखना' एक दूसरे से अलग नहीं है। दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। पढ़ने का प्रभाव लिखने की क्षमता पर पड़ता है और लिखने का प्रभाव पढ़ने की क्षमता पर। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। पढ़ने से बच्चे बेहतर लिख पाते हैं और लिखने से पढ़े हुए पाठ को बेहतर समझ पाते हैं। पढ़े हुए पाठ के बारे में लिखने से वह पाठ को अपने जीवन और अपने अनुभव के साथ बेहतर ढँग से जोड़ पाते हैं।

लिखते समय बच्चे कुछ परेशानियों से जूझते हैं। आपने देखा होगा कि

1. बच्चों में लिखने की क्षमता स्वचालित न होने से उनकी अल्पकालिक स्मृति Short term memory केवल लिखने की क्रिया पर ही केन्द्रित हो जाती है और वह आयोजन, आलेखन व पुन: निरीक्षण पर ध्यान नहीं दे पाते।

2. बच्चे अक्सर लिखने का उद्देश्य समझ नहीं पाते।

3. बच्चे अक्सर सारी जानकारियों लिख नहीं पाते।

4. अक्सर बच्चे वही लिखते हैं जो वे बोलते हैं। वे पढ़ने वाले को ध्यान में रखकर नहीं लिखते।

5. वे अपने लेखन का पुन: निरीक्षण बहुत कम ही करते हैं।

इसलिए ज़रूरी है कि लेखन की गतिविधि पढ़ने के साथ कराई जाए। अत: किसी भी विषय पर बच्चों से बातचीत ज़रूर करें। सभी बच्चों को बोलने का मौक़ा दें। फिर बच्चों से उस विषय पर लिखने के लिए कहें। बच्चे जब लिख रहे हों तब शिक्षक समूह में जाकर बच्चों से बातचीत करें कि वे क्या लिख रहे हैं या इस विषय पर क्या–क्या लिखा जा सकता है। लिखने के बाद बच्चों को अपने लेखन को ख़ुद पढ़ने और सही करने के लिए कहें। नीचे कुछ संकेत दिए गए हैं जिनकी सहायता से लेखन की शुरुआत की जा सकती है :

- चित्र देखकर लिखना – चित्र में कौन–कौन हैं, क्या कर रहे हैं, इस चित्र में क्या कोई कहानी छिपी है, चित्र को देखकर कुछ वाक्य या कहानी लिखें।
- स्थिति देकर लिखना या किसी विषय पर लिखना – बच्चे को कोई स्थिति/विषय दें और उस पर लिखने को कहें।
- अधूरे वाक्य से आगे लिखना – बच्चे को अधूरे वाक्य देकर पूरा लिखने के लिए कहें।
- रोल प्ले पर की गई चर्चा के आधार पर लिखना, प्रस्तुत नाटक पर राय लिखना आदि।
- माइंड मैप में आए शब्दों से वाक्य या कहानी लिखना आदि।

वर्कशीट पर कार्य – बच्चों को उनकी वर्कशीट के प्रश्न हल करने को कहें। पहले उन्हें वर्कशीट के प्रश्नों पर अपने–अपने समूह में चर्चा करने को कहें। फिर व्यक्तिगत तौर पर लिखने के लिए बोलें। हर वर्कशीट में तथ्यों पर आधारित कुछ सवाल हैं, कुछ inference और कुछ अनुमान लगाने वाले तो कुछ शब्द भण्डार से सम्बंधित है और कुछ प्रश्न अपनी राय देने वाले हैं। वर्कशीट में दिए गए कुछ पाठ कहानी के रूप में हैं और कुछ सूचनात्मक हैं।

लेखन की जाँच करते समय बच्चों की मदद इस तरह करें :

अच्छे लेखन के दो भाग हैं : विषयवस्तु और क्रमबद्धता। विषयवस्तु का अर्थ है कि आप जिस विषय पर लिखना चाहते हैं, उस विषय से सम्बंधित विचारों की व्यवस्था। क्रमबद्धता से मतलब है जो कुछ भी लिखा गया है उसमें वाक्य संरचना का सही उपयोग, वाक्यों में तालमेल, उचित जगहों पर विराम चिन्हों का प्रयोग और मात्राओं का सही प्रयोग आदि। किसी भी विषय पर लिखने के बाद उसे पढ़कर पुनः उसकी विषयवस्तु और क्रमबद्धता की जाँच करना बच्चों की लेखन क्षमता को और भी बेहतर बनाता है। इस पूरी प्रक्रिया को समझने और इस्तेमाल करने में शिक्षिका बच्चों को प्रेरित करें और उनकी मदद करें। यह सुनिश्चित करें कि बच्चे ने जो लिखा है, उसे वे दोबारा पढ़ें और ठीक करें। वर्कशीट करने के बाद शिक्षक/शिक्षिका वर्कशीट से सम्बंधित त्रुटियों की जाँच करें और अगले दिन उन पर बातचीत करें। बच्चों को फीडबैक मिलने से उनकी लेखन क्षमता विकसित होती है।

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

State Council for Educational Research and Training
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024